B.A
L-11
Indian
Geography

अपवाह तंत्र :-

⇒ नदी व उसकी सहायक नदियों का निश्चित दिशा में प्रवाह 'अपवाह' कहलाता है।

⇒ एक नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को 'अपवाह द्रोणी' कहते हैं।

⇒ एक नदी, विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती है, जिसे 'जलग्रहण क्षेत्र' कहा जाता है।

⇒ बड़ी नदियों के जलग्रहण क्षेत्र को नदी द्रोणी जबकि छोटी नदियों व नालों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को 'जल-संभर' कहा जाता है।

⇒ जल विभाजक एक अपवाह द्रोणी को दूसरे से अलग करने वाली सीमा है।

⇒ नदी के उद्गम स्थान से लेकर उसके मुहाने तक नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा की गई रचना को 'अपवाह प्रतिरूप' कहते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

सामान्यतया अपवाह प्रणाली को दो रूपों में विभाजित किया जाता है–

① क्रमबद्ध / क्रमवर्ती अपवाह तंत्र–

ढालों के अनुरूप प्रवाहित होने वाली सरिताओं को क्रमबद्ध अपवाह कहते हैं–

a) अनुवर्ती सरिता → हिमालय व पठार की अधिकांशत: नदियाँ
b) परवर्ती सरिता
c) प्रतिअनुवर्ती सरिता

② अक्रमवर्ती अपवाह तंत्र –

जो नदियाँ क्षेत्रीय ढाल के प्रतिकूल तथा भू-वैन्यासिक संरचना के आर-पार प्रवाहित होती हैं, उन्हें अक्रमबद्ध अथवा अक्रमवर्ती नदी कहा जाता है। ये सरिताएँ दो प्रकार से विकसित होती हैं–

a) पूर्ववर्ती अपवाह तंत्र
b) अध्यारोपित प्रवाह प्रणाली

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

पूर्ववर्ती → केवल हिमालय में

अपवाह प्रतिरूप

1. द्रुमाकृतिक / वृक्षाकार –

जब नदियों की जल धाराएँ उस स्थान के स्थलीय ढाल के अनुसार बहती हैं तो मुख्य नदी तथा उसकी सहायक नदियों के द्वारा वृक्ष की शाखाओं के रूप की तरह अपवाह प्रतिरूप का निर्माण होता है।

उदाहरण – उत्तरी भारत के मैदान की नदियाँ एवं दक्षिण भारत की पूर्व की ओर बहाव वाली नदियाँ, जैसे – गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि।

2. जालीनुमा –

जब मुख्य नदियाँ एक-दूसरे के समानांतर बहती हों तथा सहायक नदियाँ उनके समकोण पर मिलती

Scanned by CamScanner

हों तो ऐसे प्रतिरूप को जालीनुमा अपवाह प्रतिरूप कहते हैं। जालीनुमा अपवाह प्रारूप में प्राथमिक सहायक नदियाँ समानान्तर एवं गौण शाखाएँ सम-कोण पर काटती हुई प्रवाहित होती हैं।

3. आयताकार –

जब सहायक नदियाँ अपनी मुख्य नदी से समकोण पर मिलती हैं, तो इस प्रकार बने प्रतिरूप को आयताकार अपवाह प्रतिरूप कहते हैं।

उदाहरण – विंध्य की पहाड़ियों एवं पलामू क्षेत्र की कुछ नदियाँ इस प्रकार का अपवाह प्रतिरूप बनाती हैं।

⇒ अध्यारोपण की स्थिति – जल शैलों की दरारों में प्रवाहित।

4. अरीय –

जब किसी केन्द्रीय शिखर से जल धाराओं का

Scanned by CamScanner

प्रवाह सभी दिशाओं में होता है।

ऐसी प्रणालियाँ किसी ज्वालामुखी पर्वत पर, गुम्बद पर या ऊँचे टीले पर विकसित होती हैं।

उदाहरण – अमरकंटक व गिरनार पहाड़ी से निकलने वाली नदियाँ।

5. अभिकेन्द्रीय –

चारों ओर से ऊँचा हो किन्तु बीच में निचला हो अर्थात् नदियाँ किसी झील या दलदल में समाप्त हों।

उदाहरण – तिब्बत का पठार तथा लद्दाख में ऐसी प्रणालियाँ पायी जाती हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

भारत का अपवाह तंत्र :-

3 हिमालयी श्रेणी के पूर्ववर्ती नदी
- सिंधु
- गंगा
- ब्रह्मपुत्र

2 हिमालयी श्रृंखला के पूर्ववर्ती
- यमुना
- रामगंगा

Q- भारत के हिमालयी व प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र की विभिन्नताएँ उजागर कीजिए।

हिमालयी अपवाह	प्रायद्वीपीय अपवाह
पूर्ववर्ती + अनुवर्ती	अनुवर्ती
ग्लेशियर + वर्षा	मौसमी - वर्षा स्रोत
विस्तृत जल ग्रहण क्षेत्र	सीमित जल ग्रहण क्षेत्र
ढाल तीव्र, गति ज्यादा	ढाल मंद (चौड़ी घाटी)
V आकृति, गॉर्ज निर्माण	गॉर्ज निर्माण नहीं
अवसाद परिवहन क्षमता अधिक	अवसाद कम
नदी विसर्पण अधिक	विसर्पण कम

Scanned by CamScanner